REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

''पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ. विनय प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक, श्याम शिक्षा महाविद्यालय सक्ती
जिला – जांजगीर–चांपा (छ.ग.)

सारांश :–

किसी भी शिक्षण प्रणाली की सफलता का आधार शिक्षक होता है। शिक्षक ही शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है। उसके निर्देशन एवं परामर्शन के बिना विद्यार्थी ज्ञान अर्जन करने की सही दिशा प्राप्त करना कठिन है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वह शिक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करता है जिससे की बालक अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा एवं क्षमता का विकास कर सकें तथा भविष्य में उसका प्रयोग कर सके। शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। राष्ट्र की शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक प्रगति शिक्षक पर ही आधारित होती है। शिक्षक एक दीपक की तरह होता है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है।

शिक्षक के बारे में **जॉन एडम्स** ने कहा है–**''शिक्षक मनुष्य निर्माता है इस लिए कुशल प्रशिक्षित अनुभवी कर्तव्य परायण शिक्षकों की आवश्यकता है जिससे विद्यालय में शिक्षकों को अध्यापन व्यवसाय में अभिवृति होनी चाहिए।''**

शिक्षक विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक एवं पथप्रदर्शक होता है। अतः एक शिक्षक को शिक्षण अधिगम की विभिन्न पहलुओं का सूक्ष्मता से ज्ञान प्राप्त होना जरुरी ळें उसे अपने व्यवसाय के विभिन्न आयामों जैसे विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण, विषयवस्तु का उद्देश्य, प्रस्तुतीकरण, पाठ का समापन, मूल्यांकन एवं प्रबंध का ज्ञान होना चाहिए।

शिक्षक को विषयवस्तु का उद्देश्य प्रस्तुतीकरण, पाठ का समापन, उसका मूल्यांकन करने, योजना बनाने के ज्ञान में निपुण एवं कुशल होने से उसमें दक्षता आती है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं सार्थक बनाती है। एक शिक्षक को अपने विषयवस्तु को नियोजित करते समय उद्देश्यों की स्पष्टता, प्राप्ति योग्यता एवं परिशुद्धता होनी चाहिए। सम्प्रत्यय एवं सिद्धान्त स्पष्ट होने चाहिए तथा मूल्यांकन विधि उपुयक्त, वैध एवं विश्वसीय होने चाहिए एवं अपने कक्षा संचालन एवं प्रबंधन में कौशलता एवं निपुणता हासिल होने चाहिए तथा इन सभी कार्यो में निपुणता एवं कौशलता एक शिक्षक को अपने व्यवसाय में दक्ष बनाती है।

1 प्रस्तावना :–

एक शिक्षक को अपने व्यवसाय में दक्ष होने से शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली होता है। शिक्षक शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है। विषयवस्तु को सफलता एवं सुगमता से छात्रों को सीखा जा सकता है तथा इससे समस्त अन्तःक्रियाएँ सक्रिय बनी रहती है तथा छात्र भी रुचि के साथ विषयवस्तु को सीखते है।

शिक्षण दक्षता के साथ ही साथ शिक्षण व्यवस्था, कक्षा–कक्षा शिक्षण, छात्र केन्द्रित अभ्यास, शैक्षिक प्रक्रिया छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति किया जाने वाले दृष्टिकोण भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते है। शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों, शिक्षकों, कक्षा–गत शिक्षणों, शिक्षण व्यवसाय के प्रति किया जाने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण ही शैक्षिक अभिवृत्ति कहलाती है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

अतः एक शिक्षक को अभिवृत्ति का अर्थ, प्रकृति, विशेषताओं एवं निर्माण संबंधी कारकों को अच्छे तरीके से परिचित होना आवश्यक है ताकि वह अभिवृत्तियों का शैक्षिक प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव को जान सकें तथा छात्रों के नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर कर सकें तथा सकारात्मक अभिवृत्तियों के निर्माण में सहायक बन सकें।

सकारात्मक अभिव्यक्तियों के निर्माण से शिक्षकों में अपने विषयवस्तु के उद्देश्यों को प्राप्त करने में, अपनी विषयवस्तु को सफल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में, कक्षा के प्रबंधन में कुशलता एवं निपुणता आती है तथा इससे दक्षता बढ़ती है।

2 समस्या कथन :–

'' पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन''

3 उद्देश्य :–

1. शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2 पुरुष तथा महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4 परिकल्पना :–

1. शासकीय तथा अशाासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

5 संक्रियात्मक चरों का परिभाषीकरण

शिक्षक दक्षता :–

शिक्षक के लिए शिक्षण का गठन करना उसके प्रमुख कार्यो में से एक है। दक्षता भी एक शिक्षक का कार्य है जो शैक्षिक तंत्र में शिक्षण में सफलता का सार होता है। शिक्षण दक्षता के विकास शिक्षकों के बीच तथा अपने टीम की एक स्पष्ट समझ के साथ–साथ अपने आंकलन के लिए यह जरुरी है।

शिक्षण दक्षता से तात्पर्य एम.एस. ललिता एवं बी.के. पासी के सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी के द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों से है।

6 अध्ययन के पदों की व्याख्या :–

1.शासकीय विद्यालय के शिक्षक–छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा संचालित विद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाले व्यक्तियों से हैं।

2. अशासकीय विद्यालय के शिक्षक–छत्तीसगढ़ राज्य में निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित होने वाले विद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाले व्यक्तियों से है।

3. पूर्व माध्यमिक स्तर–माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 6वीं से कक्षा 8वी तक संचालित होने वाले विद्यालय से है।

7 शोध विधि

इस शोध में वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

8 जनसंख्या :–

छत्तीसगढ़ राज्य के सक्ती जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक जो वर्तमान समय में सेवारत् है, प्रस्तुत शोधकार्य की जनसंख्या है।

9 न्यादर्श–

जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य के सक्ती जिले के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में से 80 शिक्षकों का साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि के द्वारा चयन किया गया है।

तालिका क्रमांक 1
सक्ती जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से चयनित पुरुष एवं महिला शिक्षकों की संख्या का विवरण

क्र	शासकीय विद्यालय का नाम	शिक्षक	
		पुरूष	महिला
1	शा. सदर पू0 मा0 कन्या शाला सक्ती	02	05
2	बालक शा0 पू0मा0 वि0 सक्ती	05	01
3	शा0 पू0मा0 वि0 कसेापारा सक्ती	05	01
4	शा0 पू0मा0 वि0 बरपाली कला सक्ती	03	04
5	शा0 पू0मा0 वि0 पतेरापाली कला सक्ती	03	04
6	शा0 पू0मा0 वि0 बूढनपुर सक्ती	02	05
	योग	20	20
क्र.	अशासकीय विद्यालय का नाम	शिक्षक	
		पुरूष	महिला
1	जगन्नाथ पू0मा0 वि0 दमाउधारा सक्ती	06	01
2	ज्ञानकुंज पब्लिक स्कुल असौंदा सक्ती	0	07

3	दिव्यज्योति पब्लिक स्कुल नवापारा सक्ती	05	00
4	सरस्वती शिशु मन्दिर पू. मा. वि. सक्ती	04	03
5	एम0 एल0 जैन पब्लिक स्कुल सक्ती	04	03
6	गुंजन पब्लिक स्कुल सक्ती	01	06
	योग	20	20
	कुल योग	**80**	

10 उपकरण

प्रस्तुत शोध में दो उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1 सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी

- विकासकर्ता– डॉ.बी. के. पासी एवं एम. एस. ललिता
- वर्ष–1994
- प्रकाशन – राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक कारपोरेशन (उ0प्र0)

तालिका क्रमांक 1
सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी के पदों का विवरण

क्र	शिक्षण कौशल	पदों का क्रमांक	पदों की व्यख्या
1	पाठ योजना (निर्देशन पूर्व)	1,2,3,4	04
2	प्रस्तुतीकरण	5 से 15	11
3	समाप्ति	16,17	02
4	मूल्यांकन	18,19	02
5	प्रबंधन	20,21	02
		योग	21

11 अध्ययन का परिसीमन

1. यह शोध सक्ती जिले के सक्ती ब्लाक के पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित है।
2. यह शोध शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तक ही सीमित है।
3. शिक्षकों के शिक्षण दक्षता के मापन के लिए बी0के0 पासी एवं एम0एस0 लालिता द्वारा निर्मित सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी उपकरण का प्रयोग किया गया है।

12 आंकड़ों का विश्लेषण

संकलित आँकडों का वर्गीकरण एवं सारणीकरन करने के पश्चात् उनका उपयुक्त विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के प्रकृति के आधार पर सांख्यिकी के रुप में टी–परीक्षण एवं कार्ल पियर्सन सहसंबंध का प्रयोग किया गया है। दो प्रदत्तों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं

HO_1 शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 1
शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का विवरण

विद्यालय	शिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रताकोटि (df)	टी–मूल्य (t-value)	टी–सारणी मान (t-critical)
शासकीय	40	90.77	9.46	78	2.73′	1.99
अशासकीय	40	96.7	10.01			

′0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।

आकृति क्रमांक 1
शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान एवं मानक विचलन

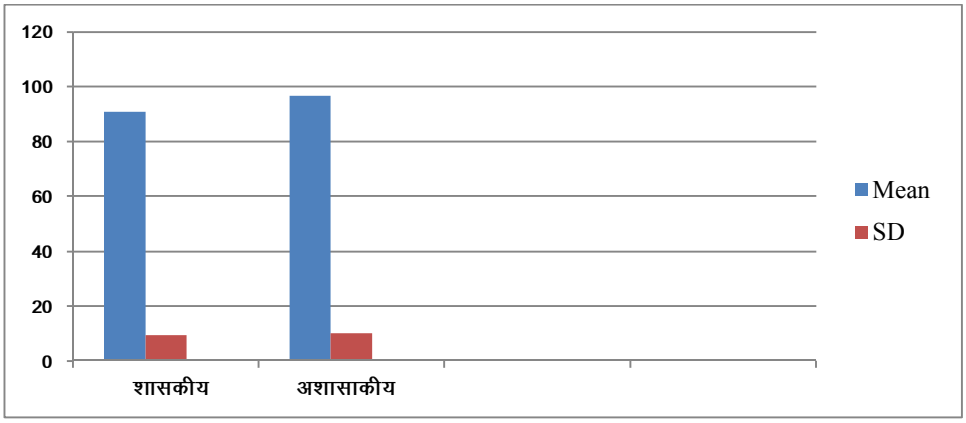

सारणी क्रमांक 1 एवं आकृति क्रमांक 1 के अवलोकन से विदित होता है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का माध्य क्रमशः 90.77 एवं 96.7 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.46 एवं 10.01 है।

गणना से प्राप्त टी–मान 2.73 है जबकि स्वतंत्रता कोटि (df) 78 के लिए 0.05 स्तर पर टी–सारणी का मान 1.99 है। टी–गणना का मान टी– सारणी मान से अधिक है। इसलिए 0.05 के स्तर पर सार्थक अंतर है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के माध्यों में सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

विवेचना :– शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर पाया कि शासकीय और अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर है। अंतर होने के कई कारण हो सकते है–जैसे शिक्षण दक्षता के विभिन्न आयामों जैसे–योजना बनाना, प्रस्तुतीकरण, समापन, मूल्यांकन एवं प्रबंधन में अशासकीय विद्यालय के शिक्षक शासकीय विद्यालय के शिक्षकों से अधिक निपुण थे। अशासकीय विद्यालय के शिक्षक शासकीय विद्यालय के शिक्षकों से अधिक दक्ष पाए गए।

HO_2 पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 2

पुरुष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य का विवरण

समूह	शिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रता कोटि (df)	टी–मूल्य (t-value)	टी–सारणी मान (t-critical)
पुरुष	40	93.35	9.79	78	0.07′	1.99
महिला	40	93.50	9.50			

′0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

आकृति क्रमांक 2

पुरुष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता का मध्यमान व मानक विचलन

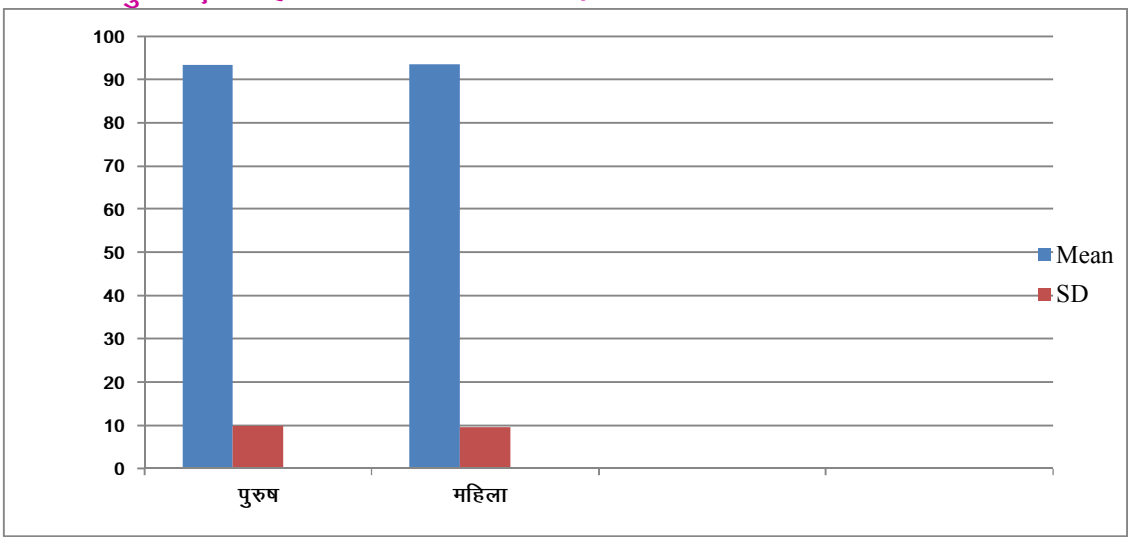

सारणी क्रमांक 2 एवं आकृति क्रमांक 2 के अवलोकन से स्पष्ट विदित होता है कि शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के शैक्षिक दक्षता के प्राप्तांकों का मध्यमान 93.35 व 93.50 तथा मानक विचलन 9.79 व 9.50 है।

गणना से प्राप्त टी–मान 0.07 है जबकि टी–सारणी का मान स्वतंत्रता कोटि (df) 78 के लिए 0.05 स्तर पर 1.99 है जो कि सार्थक नहीं है।

अतः शासकीय व अशासकीय विद्यालयों की पुरुष व महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के माध्यो में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना (HO_2) स्वीकृत होती है।

विवेचना :– शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के प्राप्तांक का विश्लेषण किया तो पाया कि पुरुष शिक्षकों की दक्षता एवं महिला शिक्षकों की दक्षता लगभग समान है क्योंकि पुरुष शिक्षक शिक्षण दक्षता के विभिन्न आयामों में उतना ही दक्ष है जितना महिला शिक्षक अर्थात् पुरुष एवं महिला दोनों समूह शिक्षण दक्षता के विभिन्न आयामों में समान रुप से दक्ष है। दैनिक अवलोकन से मैने पाया कि शिक्षण के विभिन्न दक्षताओं जैसे– योजना बनाना, प्रस्तुतीकरण, समापन, मूल्यांकन एवं प्रबंधन में जितना पुरुष शिक्षण दक्ष है उतना ही महिला शिक्षक भी दक्ष है। इसलिए पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता भी लगभग एक समान है अर्थात् उनमें सार्थक अंतर नहीं पायी गयी।

13– अध्ययन का निष्कर्ष

शोध से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

2. शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर पाया गया ।
4. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध मुख्य रुप से शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण एवं शैक्षिक अभिवृत्ति को जानने के लिए किया गया है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का शैक्षिक अभिवृत्ति लगभग समान है। परन्तु अशासकीय शिक्षकों के शिक्षण दक्षता शासकीय शिक्षकों से अधिक है, अर्थात् अशासकीय शिक्षक शासकीय शिक्षकों से अधिक दक्ष होते है।

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि शासकीय विद्यालयों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अव्यवहारिक होता जा रही है। वर्तमान समय में शिक्षक अपने कर्तव्यों से विमुख होता जा रहा है। वे अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन होते जा रहे है।

उनमें कला–कौशलों ज्ञान, दक्षता निपुणता की कमी है। वे अपने पाठ्य वस्तु का नियोजन प्रस्तुतीकरण,समापन, प्रबंधन करने में उतने दक्ष नहीं हैं जितने उन्हें होना चाहिए। उनमें दक्षता की कमी है। चूंकि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। अतः शिक्षकों को अपने व्यवसाय के प्रति कर्तव्य निश्ठता की भावना का विकास करना होगा उन्हें अपने शिक्षण व्यवसाय में निपुण दक्ष बनाना होगा तथा इसके लिए उन्हें अच्छी तरह से प्रशिक्षण देने की जरुरत है ताकि वे अपने व्यवसाय में दक्ष हो सके। शिक्षक के रुप में उन्हीं व्यक्तियों की नियुक्ति किया जाना चाहिए, जो अपने व्यवसाय में निपुर्ण एवं दक्ष है।

शासकीय शिक्षकों को समय–समय पर अपने व्यवसाय के विभिन्न आयामों में निपुण बनाने के लिए प्रशिक्षण एवं सुझाव भी देना चाहिए। शासकीय शिक्षकों को शिक्षणीय कार्य के अलावा अन्य कार्यो जैसे– जनगणना, चुनाव, मतदाता सूची तैयार करना, पल्स पोलियों अभियान, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सहायता के कार्यो में संलग्न किया जाता है, जिससे वे अपनी विद्यालय में पर्याप्त समय नहीं दे पाते है तथा इससे भी उनकी शिक्षण दक्षता प्रभावित होती है।

शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के शैक्षिक अभिवृत्ति में लगभग समाज है फिर भी शैक्षिक अभिवृत्ति को उच्च करने के लिए तथा सकारात्मक अभिवृत्ति को अधिक से अधिक उन्नत करने के लिए भी अधिकारियों द्वारा समय समय पर निरीक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :

- http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in, 2024
- सिंह, ए.के. (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन पब्लिकेशन।
- सिंह, ए.के. (2013), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, वाराणसी मोतीलाल बनारसीदास।
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2012), शिक्षा तकनीकी के मूल आधार, आगरा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
- गुप्ता एस. पी. (2011), अनुसंधान संदर्शिका , इलाहाबाद, शरदा पुस्तक भवन।
- चौहान, आर. एवं गुप्ता पी. (jan. 2014) , गाजियाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षको की शिक्षण दक्षता का अध्ययन www.tspmt.com,asian journal of Eduction Reaserch & Technoology vol 4(1), Issn(print) : 2244-7374
- तिवारी जी. एन. (2013), इलाहाबाद जिले के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण दक्षता एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन, गूगल स्कालर डॉट कॉम, Himgiri Education Review volume 1, Issue 2 2321-6336.
- देवी, ए.एन.(2010). डिंडीगुल शैक्षिक जिले के उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के शिक्षण दक्षता एवं आत्म–प्रभावकारिता का उनके छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के संबंध पर अध्ययन, महिला मदर टेरेसा विश्वविद्यालय, कोडेकनल, http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in,
- प्रसाद, के. (2006). शिक्षकों के उनकी अंग्रेजी भाषा शिक्षण योग्यता पर अभिप्रेरणा दक्षता एवं अभिक्षमता का अध्ययन, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (NCERT) मैसूर. http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in.
- मंगल, एस. के. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान नई दिल्ली PHI learning private limited